International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.9 No.5 May – June 2022

हिन्दी के माध्यम से जापानी सिखने का तुलनात्मक अभ्यास।

Varad Rajan Bhanage
Japanese Language Trainer, Associated with Himalaya Center for Skill Enhancement (Language School)
***Corresponding Author*- Varad Rajan Bhanage**

संक्षेप:

भाषा एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिये एक सभ्यता दूसरे सभ्यता के साथ तमाम विषयों का आदान प्रदान कर सकती है। यह एक ऐसा माध्यम है जो रोजमर्रा के जीवन को सरलता से व्यतीत करने के लिए अति आवश्यक माना जाता है। आज के तारीख में दुनिया में जितनी भी भाषाएँ चयन में है उसमें से कोई भी भाषा, कोई भी व्यक्ति, कभी भी सीखना चाहे तो सिख सकता है। कई भाषाएँ ऐसी है जो दूसरे भाषा से मेल खाती है। इन भाषा साधर्म्य का उपयोग करके हम कोई भी दूसरी भाषा सीख सकते हैं और उसका प्रयोग भी व्यवहार में कर सकते हैं। भाषा अभ्यास के लिए और एक भाषा का आधार लेकर दूसरी भाषा सीखने के लिए यह भाषाओं कि साम्यता का उपयोग कर के बहुत ही अच्छी तरह से हम भाषा का अध्ययन-अध्यापन कर सकते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में जापानी बोली भाषा और हिंदी बोली भाषा में जो सम्यताए है, जो की अपने आप में एक विशेष है, उस पर प्रकाश डालने की कोशिश की गई है। जिस तरह के वाक्य प्रकार हिंदी बोल चलन में पाए जाते हैं उनसे मिलते जुलते वाक्य के नमूने जापानी बोली भाषा में भी प्रयोग में लाए जाते है। रोजमर्रा के जीवन में पाई जाने वाले कुछ चुनिंदा वाक्य के प्रकार जो जापानी और हिंदी भाषा में समानता से उपयोग में लाए जाते है उनका उदाहरण सहित स्पष्टीकरण यहाँ पर किया गया है।

दृष्टिकोण:

हिन्दी और जापानी भाषा मूलतः भिन्न-भिन्न भाषाएँ है। इन दोनों भाषाओं की उत्पत्ति भी स्वाभाविकता भिन्न मानी जाती है। दोनों भाषाओं में मुख्यतः लिपी का अंतर है। एक और जापानी भाषा चित्र लिपी में बद्ध है तो दूसरी और हिन्दी भाषा देवनागरी लिपी का प्रयोग किया जाता है।

वैसे दिखने पर दोनों भाषाओं में काफ़ी अंतर नजर आता है लेकिन जापानी और हिन्दी में कई सारी रचनाएँ ऐसी है जो आपस में मेल खाती है। बोली चयन के हिसाब से, ऐसे कई सारे वाक्य के नमूने है जो, जिस तरह हिन्दी में बोले जाते है उसी तरह जापानी भाषा में भी प्रयोग में लाए जाते है। जिस तरह हिन्दी बोली भाषा में विविध वाक्य समूहों का, मुहावरे-नुमा शब्दों का और वाक्यों का खास उद्देश्य से या कोई खास अर्थ का उद्बोधन करने के लिए उपयोग किया जाता है उसी प्रकार के अर्थ को प्रकट करने के लिए जापानी भाषा में भी हिन्दी से साधर्म्य रखने वाले वाक्य समूह पाए जाते है। हालाँकि जापानी भाषा शास्त्र में इन वाक्य समूहों को या शब्दों को किसी अलग नाम से या संबोधन से जाना जाता हो लेकिन वह हिन्दी के समान ही अर्थ की उत्पत्ति करता है। हिन्दी और जापानी भाषा के चहेतों के लिए यह अपने आप में एक विशेषता है जो प्रखर रुप से उभरकर आती है और भाषाओं कि तुलनात्मक विशेषता प्रकट करती है।

द्वित्व :

“भाषा विज्ञान में जब किसी शब्द के मूल या stem को दोहराया जाता है तो उसे द्वित्व कहते है। मूल कि पुनरावृत्ति हूबहू हो सकती है या मामूली परिवर्तन के साथ”।

1.चाय-वाय पीयेंगे।

おちゃでも 飲みましょう。

2.चाकलेट-वाकलेट खरीद के लाना।

チョコレートでも 買って 行きなさい。

यहाँ पर ‘चाय’ के साथ ‘वाय’ और ‘चाकलेट’ के साथ ‘वाकलेट’ शब्द हिन्दी बोली भाषा में उपयोग में लाया जाता है जिसका वास्तव में कोई अर्थ परिणीत नहीं होता। वैसे ही जापानी भाषा में नाम के साथ ‘でも’(देमो) शब्द का उपयोग किया जाए तो वह हिन्दी के द्वित्व के साथ मेल खाता है।

यहाँ ‘चाय-वाय’ जैसे ‘おちゃでも’ और ‘चाकलेट-वाकलेट’ जैसे ‘チョコレートでも’ का प्रयोग किया गया है।

3.वर्तमान पत्र पढते-पढते चाय पिता हूँ।

しんぶんを 読みながら おちゃを 飲みます。

4.टीवी. देखते-देखते काम करता हूँ।

テレビを 見ながら しごとを します。

इन दो वाक्य प्रकारों में समान क्रिया शब्द का द्वित्व उपयोग किया गया है। जैसे 'देखते-देखते' और 'पढ़ते-पढ़ते'। जापानी भाषा में अगर क्रिया शब्द के साथ ながら (नागारा) शब्द का प्रयोग होता है तो वह हिन्दी के इस द्वित्व के समान अर्थ का उद्बोधन करता है।

निश्चय बोधक संयुक्त क्रिया:

"धातु के आगे उठना, बैठना, आना, जाना, पड़ना, डालना, लेना, देना, चलना, रखना, रहना इत्यादि के लगाने से निश्चय बोधक संयुक्त क्रिया का निर्माण होता है"।

1.यह मिठाई खाके देखना।

この おかしを 食べて みて ください。

2. यह कॉफी पिके देखना।

この コーヒーを 飲んで みて ください。

यहाँ पर मुख्य क्रिया के बाद 'देखना' का प्रयोग हुआ है जो शब्दशः 'देखना' का अर्थ प्रकट नहीं करता। यह बस एक बोली भाषा का चयन है जिसे हिन्दी में निश्चय बोधक क्रिया कहा जाता है। वैसे ही जापानी भाषा में मुख्य क्रिया के बाद यदि 'みて ください' (मिते कुदसाई) का उपयोग किया जाए तो वह हिन्दी के 'देखना' जैसे ही अर्थ प्रकट करता है।

यहाँ लिखे वाक्यों में खाके देखना के लिए जापानी में 食べて みて ください (ताबेते मिते कुदासाई) और पी के देखना के लिए 飲んで みて ください (नोन्दे मिते कुदसाई) का उपयोग किया गया है।

1.हमने एक घण्टे में किताब लिख डाली।

私は 一時間に 本を 書いて しまいました。

2.उसने साफ़-सफ़ाई कर डाली।

かれは そうじを して しまいました。

इन वाक्यों में मुख्य क्रिया के बाद 'डाली' शब्द का उपयोग किया गया है जिसका मूल धातु 'डालना' है। यह हिन्दी बोली भाषा का एक चयन है और यह चयन, क्रिया पूर्ण रुप से होने का उद्बोधन करता है। इसी तरह जापानी में यदि हम मुख्य क्रिया के बाद 'しまいました' (शिमाईमाशीता) का प्रयोग करते है तो यह हूबहू हिन्दी जैसा ही अर्थ प्रकट करता है।

1.रेस्टारंट का आरक्षण करके रखा है।

レストランの よやくを して おきました。

2. वहाँ पत्र लिख के रखा है।

そこに てがみを 書いて おきました。

यहाँ पर मुख्य क्रिया के बाद रखा है इस शब्द समूह का प्रयोग किया गया है जो कि वस्तुतः किसी वस्तु को रखने के बारे में नहीं बल्कि एक क्रिया के पूर्ण होने का अर्थ उद्घोषित करती है। इसी तरह जापानी में यदि हम おきました (ओकिमाशिता) का प्रयोग क्रिया के बाद करते है तो वह भी हिन्दी के रखा है जैसे ही काम करता है।

नकारात्मक रचना :

"जिन वाक्यों में से क्रिया न होने या न किए जाने का भाव प्रकट होता है उसे नकारात्मक वाक्य कहते है। इन वाक्य प्रकारों में नहीं, मत, किए बगैर, किए बिना, न आदि शब्दों का प्रयोग होता है"।

1.कागज नहीं पेन लाना।

かみ じゃない ペン を 持って ください。

2.हम कॉफी नहीं चाय पिते है।

私は コーヒー じゃない おちゃを 飲みます。

इन दो वाक्यों में दो नाम के बीच में, नहीं शब्द का प्रयोग किया गया है जो कि नकारात्मक भाव की उत्पत्ति करता है। जापानी भाषा में भी दो नाम के बीच में यदि じゃない (जानाई) का प्रयोग किया जाए तो वह भी हिन्दी के जैसे ही नकारात्मक भाव प्रकट करता है। यहाँ पर कागज नहीं पेन इसके लिए かみ じゃない ペン और कॉफ़ी नहीं चाय इसके लिए コーヒー じゃない おちゃ का प्रयोग किया गया है।

1.हम नाश्ता खाए बिना पाठशाला को गए ।

私は あさごはんを 食べないで がっこうへ 行きました。

2.पत्र लिखे बिना भेज दिया ।

てがみを 書かないで 出しました。

यहाँ पर 'किए बिना', 'लिखे बिना' इन शब्द समूहों का प्रयोग किया गया है जो कि नकारात्मकता प्रकट करता है। जापानी भाषा में भी क्रिया के साथ यदि 'ないで' (नाईदे) शब्द का प्रयोग किया जाए तो यह भी हिन्दी के 'बिना'/ 'बगैर' जैसा अर्थ प्रकट करता है।

1.यहाँ पर गाड़ी खड़ी मत करना।

ここで 車を 止まないで ください。

2.सिनेमाघर में खाद्य पदार्थ मत खाना।

えいがかんで たべものを 食べないで ください。

इन वाक्यों में 'मत' शब्द का प्रयोग क्रिया के साथ किया गया है जो उस क्रिया के नकारात्मक अर्थ को प्रकट करता है। इसे नकारात्मक आज्ञा भी कहाँ जाता है। वैसे ही जापानी भाषा में यदि क्रिया के साथ 'ないで ください' (नाईदे कुदसाई) इस शब्द समूह का प्रयोग होता है तो वह भी नकारात्मक आज्ञा का भाव जताता है।

कारक चिन्ह :

"संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के बाद 'ने', 'को', 'से', 'के लिए' आदि जो चिन्ह लगते है वे करक चिन्ह या कारक विभक्ति कहलाते है। अथवा व्याकरण में शब्द (संज्ञा, सर्वनाम तथा विशेषण) के आगे लगा हुआ वह प्रत्यय या चिन्ह विभक्ति कहलाता है जिससे पता है कि उस शब्द का क्रिया से क्या संबंध है"।

कारक चिन्ह	उदाहरण
ने	राम ने रावण को मारा।
को	मोहन ने साँप को मारा।
से, द्वारा	बालक गेंद से खेल रहा है।
को, के लिए	स्वास्थ्य के लिए सूर्य नमस्कार करो।
से (अलग होना)	बच्चा छत से गिर पड़ा।
का, की, के, ना, नी, ने, रा, री, रे	यह रमेश कि किताब है।
में, पर	कमरे में टीवी रखा है।
हे! अरे! अजी!	अरे भैय्या! क्यों रो रहे हो।

हिन्दी में जैसे कारक चिन्ह का प्रयोग या विभक्तियों का प्रयोग वाक्य को अर्थपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है उसी तरह जापानी भाषा में कुछ चुनिंदा अक्षरों का प्रयोग किया जाता है जिसे जापानी में じょし (जोशी) कहा जाता है और ये हूबहू कारक चिन्ह कि ही तरह काम करता है।

उदाहरण	कारक चिन्ह /じょし (हिन्दी एवं जापानी)
हम ने शिक्षक को फूल दिए। 私は せんせいに 花を あげました。	को に
हम भारत से आए है। 私は インドから 来ました。	से から
जापानी लोग चापस्टीक से खाना खाते है। 日本人は はしで ごはんを 食べます。	से で
काम के लिए जापान जाता हूँ। しごとで 日本へ 行きました。	के लिए で
रेल गाड़ी स्टेशन में रुकी है।	में

でんしゃは えきで 止まって います。	で
यह सारा कि किताब है। これは サラさんの 本 です。	कि の
अजी! यह कहा पर है। あのう、これ どこ ですか。	अजी あのう

निष्कर्ष:

1. जापानी भाषा और हिन्दी भाषा में कई साम्यताए है जो किसी भी जापानी भाषा के विद्यार्थी या शिक्षक के लिये सहायक साबित हो सकती है। यदि कोई विद्यार्थी जापानी सिखना चाहता है तो, शिक्षक हिन्दी भाषा को सहायक भाषा के तोर पर उपयोग में लाकर बहुत ही प्रभावी तरीके से जापानी भाषा का अध्यापन कर सकते है।
2. कोई भी हिन्दी भाषिक या हिन्दी समझने वाला व्यक्ति बड़ी आसानी से जापानी भाषा का अध्ययन हिन्दी के माध्यम से कर सकता है। हिन्दी के माध्यम से जापानी सिखी जाए तो काफ़ी सरलता से जापानी का अभ्यास किया जा सकता है।
3. भारत और जापान इन दोनों राष्ट्रों में जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आदान-प्रदान हो रहा है उसे हम अच्छी तरह से बढ़ावा दे सकते है। अगर हिन्दी भाषिक हिन्दी के माध्यम से जापानी भाषा सिखे या जापानी भाषिक जापानी के माध्यम से हिन्दी भाषा सिखे तो यह आदान-प्रदान बड़ी सरलता पूर्वक किया जा सकता है।
4. जापानी रोजगार बाजार में जो मानवीय संसाधन कि मांग है, वह भारत देश आसानी से पूरा कर सकता है, जो भारतीय अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए सहाय कारक हो सकता है।

संदर्भ सूची :

1. 'द्वित्व कि परिभाषा' https://educalingo.com/hi/dic-hi/dvitva
2. 'निश्चय बोधक संयुक्त क्रिया कि परिभाषा' https://www.aplustopper.com/kriya-in-hindi/
3. 'नकारात्मक रचना कि परिभाषा' https://www.learncbse.in/cbse-class-9-hindi-a-vyaakaran-vakya-bhed/
4. 'कारक चिन्ह कि परिभाषा' https://www.mycoaching.in/2018/09/karak-hindi.html?m=1